Quadrant II – Notes

Programme : Bachelor of Arts (Third Year)

Subject **:** Hindi

Semester **:** IV

Paper code **:** HND 105

Paper title **:** भारतीय साहित्य

Title of the unit: Unit III – भारतीय साहित्य(चेम्मीन/मछुआरे-तकषी शिवशंकर पिल्लै)

(मलयालम उपन्यास)

Module Name : **चेम्मीन/मछुआरे उपन्यास का कथ्य**

Module Number : 11

Name of the Presenter: Dr. Vaishali Naik

मछुआरे उपन्यास का कथ्य

चेम्मीन उपन्यास तकषि शिवशंकर पिल्लै द्वारा 1956 में मलयालम भाषा में लिखित उपन्यास है जो हिंदी में मछुआरे नाम से अनुवादित हुआ है । इस उपन्यास की कथा इस प्रकार है।

कथासार

मछुआरे एक असाधारण प्रेम कहानी है। कथानक के केंद्र में कथाकार ने करुत्तम्मा एंव परीक्कुट्टि के प्रेम को प्रतिष्ठापित किया है। अरय स्त्री करुत्तम्मा और चतुर्थ वेदानुयायी(इस्लाम) परीक्कुट्टि के बीच का प्रेम जिनके बीच वैवाहिक संबंध स्वीकार्य नहीं होता। केरल के समुद्री तट पर मछली पकड़कर जीवन-निर्वाह करने वाला एक समुदाय है जिसे अरय कहते है अर्थात् मछुआरे । इन्हीं मछुआरे के जीवन परिवेश का चित्रण चेम्मीन उपन्यास में किया गया है । आलप्पुषा इलाके के निकट के नीर्क्कुन्नम समुद्र तट पर चेम्पनकुंजु अपनी पत्नी चक्कि और दो बेटियों के साथ रहता है । बड़ी बेटी कुरुत्तमा युवती है जो अब सोलह या सत्रह साल की है और अरय समाज में

लड़कियों की शादी ग्यारहवीं उम्र में ही हो जाती है । उसकी छोटी बहिन है पंचम। यह अरय समाज छोटी-छोटी झोंपड़ियों में रहता है । चेम्पनकुंज का बचपन का साथी अच्छनकुंज भी अपनी पत्नी नल्लापेण्णु के साथ पड़ोस में रहता है । समुद्री तट पर मछली खरीदकर बेचने के लिए अन्य धर्म- जाति का व्यक्ति आया करता था। इसका हाथ पकड़कर उसका बेटा परीक्कुट्टि भी समुद्र तट पर आता था । करूतम्मा और परीक्कुट्टि दोनों बचपन के दोस्त है, दोनों को एक दूसे से लगाव है किंतु वे जानते थे कि दोनों का धर्म अलग होने के कारण समाज उनके प्रेम संबंध को मंजूर नहीं करेगा। अरय की जीवन-शैली को नियंत्रण में रखनेवाला एक मिथक है जिसे उपन्यास के प्रथम अध्याय में जोड़ दिया है। जब पंचमी अपनी अम्मा को करुत्तम्मा और परिक्कुट्टि के संबंध में बताती है तब चक्कि बेटी को मिथक के बारे में बताती है । उस मिथक के अनुसार स्त्री की चरित्र शुध्दि का मूल्य जीवन है - इस तथ्य को प्रत्येक माता अपनी बेटी को बताती है। लहरों ओर जल धाराओं से होड़ करते हुए अरय जब समुद्र की गहराइयों में जाता है तो उसकी पत्नी को व्रत शुचिता का पालन कर तट पर तप करना होता है । तभी पुरूष सजीव लौटता है।

इसी अध्याय में चेम्पनकुंजु के अदम्य लालच को भी दिखाया है। यही घटना कथानक को आगे बढ़ाती है। अन्य जाति के सभी आदमियों को अपनी नांव और जाल के मालिक बनना संभव नहीं था। बहुत ही कम लोग थे जिनके पास अपनी नाव और जाल हो। किसी और की नांव में मल्लाह बन के आम लोग जाया करे थे। समुदाय में यह भी विश्वास था कि अरय जाति के सभी लोग नाव नहीं खरीदते थे। चेम्पनकुंज मछुआरा है। वह एक चतुर नाविक भी है । समाजिक नीतियों के विरोध कर वह अपनी एक नाव खरीदना चाहता है । इसके लिए वह करतुम्मा के जरिए परीक्कुट्टि से नाव और जाल खरीदने के लिए रुपये उधार माँग लेता है । मछली का सफल व्यापार करने के बाद संपत्ति आने पर चेम्पनकुंजु परीक्कुट्टि के पैसे नहीं लौटाता। इतना ही नहीं दूसरी नाव खरीदने के लिए उससे और पैसे उधार लेता है । परिक्कुट्टी के ही डेरे से सूखी मछलियाँ बोरों में भरकर चेम्पनकुंजु बिक्री करता था। इस तरह वह परिक्कुट्टी का कर्जदार बन जाता है। चेम्पनकुंजु की दोनों नावों से खबू व्यापार तो हो जाता है, पर वह परिक्कुट्टी का धन नहीं लौटाता। चेम्पनकुंजु अमीर बन जाता है और उसके

स्वभाव में अंतर आता है। इसी संबंध में अच्चनकुंजु और चक्कि के बीच झगड़ा हो जाता है। अच्चनकुंजु भी नाव खरीदने का निश्चय करता है। चेम्पनकुंजु का कार्य समुदाय की मर्यादाओं के विरुध्द है। पोतकार होने पर भी उसने नाव खरीदी है। तट के मुखिया की अनुमति नहीं ली है। सयानी लडकी जब घर में है तब कौन नाव और जाल खरीदने की बात सोच सकता है। दस साल में लड़की की शादी होनी चाहिए। यही समुद्र तट के कायदे-कानून हैं। समुद्र तट के सभी मछुआरे लोग चेम्पनकुंजु के विरुध्द खड़े हो गये । लेकिन चेंपन की राय में पड़ोसी ईर्ष्यालु थे । पैसा आने से चक्कि के स्वभाव में भी परिवर्तन दीखने लगा। परिक्कुट्टि से उधार में लिए पैसे करूत्तमम्मा के कहने पर भी चुकाये नहीं जाते ।

एकाएक एक दिन समुद्र का रंग बदल जाता है। पोला आ गया था। पानी लाल हो गया। समुद्रतट पर फाके के दिन होने लगे। हरेक के पास बचत खत्म हो चुकी थी। परिक्कुट्टि की हालत और बिगड़ जाती है। परिक्कुट्टि सागरतट को छोड़कर और कहीं जाने के लिए तैयार नहीं था। उसकी बुरी हालत देख कर करुत्तम्मा विचलित हो जाती है। समुद्र की उथल-पुथल शांत हो जाने की बाद दूर-दूर से नावें आने लगी। चेम्पनकुंजु की नाव भी सबसे पहले समुद्र की ओर गयी। दूसरे दिन भी चेंपन की नाव आगे थी लेकिन एक और नाव भी तेजी से आगे बढ़ रही थी। जिसका पतवार चालक था पलनि। इसी पलनि से करुत्तमा की शादी तय होती है। चेम्पन खुश इस बात से था कि पलनि बिना स्त्री धन लिए ही शादी करने के लिए तैयार था। करुत्तम्मा भी परि का पैसा चुकाने के बाद शादी के लिए मान जाती है। शादी के बाद चेम्पन पलनि को अपने घर रखना चाहता था लेकिन पलनि उसका विरोध करता है । करुत्तम्मा भी जाने के लिए तैयार होती है। इस बात से चेम्पन उस पर नाराज होकर उससे अपना संबंध तोड़ लेता है। यहाँ तृक्कुनप्पुषा में नये जीवन की साध लेकर करुतम्मा गृहणी और घर की मालकिन के तौर पर अपना जीवन पलनि के साथ शुरू करती है। लेकिन लोगों की बाते उनके शादीशुदा जीवन पर भी असर ड़ालती है। लोगों के अनुसार करुत्म्मा की शादी पलनि जैसे व्यक्ति से की गयी जिसका न कोई घर है न रिश्ते- संबंधी। पड़ोसी औरतों को संदेह हुआ की करुत्तम्मा में कोई खोट है। पलनि भी उसे यही कहता है कि वह तट पर रहने अयोग्य लड़की थी। उसे पलनि के माथे मढ़ दिया गया। इस बात

से दुखी करुत्तम्मा पलनि से पतिव्रता मल्लाहिन होकर रहने की बात करती है। यहाँ चेंपन के घर की हालत बिगड़ती रही। चक्कि के मौत का जिम्मेदार करुत्तम्मा को माननेवाले चेंपन ने माँ के मौत की खबर भी उसे नहीं दी। एक मल्लाहिन को मरने की खबर देने के लिए एक मुलसमान के आने के कारण पलनि के यारों ने उससे संदेह प्रकट किया। पलनि को नव पर आने नहीं दिया। अपनी समुद्र पर अपना अधिकार जताते हुए पलनि करुत्तम्मा की बचत और उसके सोने का गहना बेचकर काँटा और एक छोटी नाव खरीदता है। कुछ दिन बाद करुत्तम्मा एक बच्ची को जन्म देती है। उसके पिता चेंपन दुसरी शादी करते है। पाप्पी का एक बड़ा बेटा था गंगादत्त। एक नये पति की जरूरत पाप्पी के नहीं है लेकिन पारिवारिक स्थिति के कारण वह चेंपन के यहाँ आती है। पंचमी पप्पी को सम्मान नहीं देती। तब उसे करुत्तम्मा के प्रेम संबंध के बारे में पत्ता चलता है वह पंचमी को पीटता है। पाप्पी कर्ज लेकर नाव और जाल के मरम्मत के पैसे अपने बेटे को देती है । जिससे गुस्सा होकर चेंपन पाप्पी को घर से मार भगाता है। घटवार के यहाँ आकिर में समझौता होता है। चेंपन परीक्कुट्टि के पैसे लौटा देता है। पंचमी अपने बहन के घर आ जाती है। पंचमी के आते ही पलनि को लगा की घर में काली छाया छा गयी है। घर का वातावरण गंभीर होने लगा। दोनों बहने अपने जीवन की बीती बातों में डूब जाती है। इसी बात में परीक्कुट्टि का जिक्र आता है और तभी पलनि के सामने वह अपने प्रेम को स्वीकार करती है। उस दिन पलनि समुद्र में गया वही उसकी नाव भंवर में फँसी। बीच में एक शार्क को पकडने के लिए पलनि काँटा डालता है लेकिन नाव के साथ पलनि भी पानी में खिंच जाता है। यहाँ करुत्तम्मा को यह रात अजीब लगती है । अपने नाम की पुकार सुनकर वह दरवाजा खोलकर बाहर आती है। वह समुद्र तट पर चलती है। वही स्वच्छ चाँदनी में परीक्कुट्टि खड़ा था। कुछ क्षण के लिए दोनों अपने जीवन की विफलताओं को भूलकर एक- दूसरे के प्रेम में खो जाते है। उस रात आँधी, तुफान, बिजली, मेघगर्जन सब के मिलन के साथ संहार का काम पूरा हो गया। पंचमी तट पर बच्ची को गोद में लिए खड़ी-खड़ी रो रही थी और बच्ची माँ- बाप के लिए तीथ- पुकार मचाये जा रही थी। दो दिन बाद अलिंगन बध्द स्त्री- पुरूष के मृतशरीर वहाँ किनारे लग गए। कुछ दूर समुद्र तट पर काँटा निगला हुआ शार्क भी किनारे लगा था।